पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित ठाकुर जयदेव सिंह जी समृद्ध भारतीय ज्ञान-परम्परा के ऐसे सुयोग्य वाहक थे जिन्होंने अपने दैदुष्य से समग्रता के साथ भारतीय विद्या का समन्वयन किया। ठाकुर साहब ने जहाँ अपने आरम्भिक जीवन-काल में देश में प्रचलित शिक्षा-पद्धति से ज्ञानार्जन किया, वहीं दर्शन, संगीत एवं आगमशास्त्र की दीक्षा पारम्परिक गुरु-कुल शैली में गुरुओं के श्री-चरणों में बैठकर प्राप्त की। डॉ0 एनीबेसेन्ट, डॉ0 भगवान दास, आचार्य नरेन्द्र देव जैसे गुणी जनों के स्नेहभाजन ठाकुर जयदेव सिंह ने महामहोपाध्याय पण्डित गोपीनाथ कविराज, काश्मीर शैव दर्शन के महापण्डित स्वामी लक्ष्मण जू एवं संगीत विद्या के गुरुजन पण्डित नानूभैया तैलंग, पण्डित श्रीकृष्ण हरिहिरलेकर, पण्डित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जैसे ख्यातिलब्ध मनीषियों से दर्शन और संगीत के गूढ़ रहस्यों को समझा।

ठाकुर साहब का जन्म पूर्वी उत्तरप्रदेश के शोहरतगढ़ नामक स्थान पर एक जमींदार परिवार में हुआ था। 1857 के राष्ट्रव्यापी आन्दोलन में आपके पितामह की सक्रिय भागीदारी रही। ऐसे कट्टर देशप्रेमी परिवार में उत्पन्न ठाकुर जयदेव सिंह जी शिक्षा हेतु काशी में डॉ0 एनीबेसेन्ट के सानिध्य में आये जिसका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। दर्शन शास्त्र एवं संस्कृत भाषा में स्नातकोत्तर उपाधि ग्रहण करने के साथ आजीविका के लिए ठाकुर साहब ने डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर में प्राध्यापक के रूप में तथा युवराज दत्त महाविद्यालय, लखीमपुर खीरी में प्राचार्य के रूप में अपनी सेवा दी। आकाशवाणी में चीफ म्युज़िक प्रोड्यूसर रहते हुए उन्होंने प्रातःकालीन मंगल-शहनाई वादन एवं वन्देमातरम् का प्रसारण, संगीत के राष्ट्रीय कार्यक्रम तथा रेडियो संगीत सम्मेलन एवं ग्वालियर का प्रसिद्ध 'तानसेन समारोह' प्रारम्भ किया। ठाकुर साहब के जीवन में सीखने, पढ़ने और चिन्तन की जो उत्कण्ठा, जिज्ञासा और एकाग्रता दिखायी पड़ती थी वह विरले लोगों में ही होती है। उस समय जबकि आंग्लभाषा के माध्यम से भारतीय दर्शनों का स्वाध्याय अभिमान का विषय बन रहा था, आपने न केवल भारतीय दर्शन को संस्कृत भाषा में उपलब्ध मूलग्रन्थों के माध्यम से ग्रहण किया, अपितु पाश्चात्य दर्शनों में संस्कृतछाया डालकर नवीन आलोक की सृष्टि की।

जीवन यात्रा के अन्तिम पड़ाव के लिए उन्होंने वाराणसी को चुना। सरकारी सेवा से अवकाश के उपरान्त उन्होंने जीवन के उत्तरार्ध को पूर्णतया अध्ययन और लेखन को समर्पित कर दिया। काश्मीर शैव दर्शन, संगीत शास्त्र एवं सन्त कबीर के साहित्य पर प्रकाशित ग्रन्थ उनके गहन अध्यवसाय एवं चिन्तन का स्वतः परिचय देते हैं। ठाकुर साहब ने भारतीय ज्ञानपरम्परा को आगे ले जाने में अविस्मरणीय योगदान दिया है।

ठाकुर साहब जितने गहन विचारक थे उतने ही उच्चकोटि के लेखक और प्रखर वक्ता थे। उनका धाराप्रवाह, सारगर्भित एवं तथ्यपरक व्याख्यान सुनना अत्यन्त रुचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक होता था। ठाकुर साहब के ऐसे व्याख्यानों का संकलन इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में उपलब्ध है जो शीघ्र ही पुस्तक के रूप में प्रकाशित होगा। उनकी हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ, डायरी आदि भी केन्द्र में संगृहीत हैं। उनके व्यक्तिगत पुस्तकालय की लगभग 1100 दुर्लभ पुस्तकों को लेकर केन्द्र के कलानिधि प्रभाग में एक विशेष प्रकोष्ठ की स्थापना की गयी है।

भारतीय ज्ञान-परम्परा के सुयोग्य वाहक ठाकुर जयदेव सिंह जी की 125वीं जयन्ती के अवसर पर काश्मीर शैवदर्शन एवं भारतीय संगीत के विशेष संदर्भ में आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

19-20 सितम्बर 2018

19 सितम्बर 1893 - 27 मई 1986

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी

उत्तरापेक्षी 0542-2570238, 09868114985

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

मान्यवर,

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा प्रसिद्ध दार्शनिक एवं संगीत शास्त्री ठाकुर जयदेव सिंह जी की 125वीं जयन्ती के अवसर पर द्विदिवसीय (19-20 सितम्बर, 2018) राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। यह संगोष्ठी काश्मीर शैव दर्शन एवं भारतीय संगीत के गवेषणात्मक अध्ययन एवं सम्वर्धन में ठाकुर जयदेव सिंह जी के अवदान पर केन्द्रित है जिसमें सम्बन्धित विषय के निष्णात विद्वान भाग ले रहे हैं जिसका शुभारम्भ आचार्य सुधांशु शेखर शास्त्री जी करेंगे।

इस संगोष्ठी में आप सादर आमन्त्रित हैं।

कार्यक्रम

दिनांक 19 सितम्बर 2018

स्थान : सभागार, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिसर

विषय : काश्मीर शैव दर्शन के अध्ययन में ठाकुर जयदेव सिंह का अवदान

उद्घाटन सत्र : प्रातः 10.30 - 12.00 बजे तक
मंगलाचरण : प्रो. स्वरवन्दना शर्मा
अध्यक्ष : प्रो. गया चरण त्रिपाठी
मुख्य अतिथि : प्रो. नवजीवन रस्तोगी
विशिष्ट अतिथि : प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल
बीज वक्तव्य : प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी

प्रथम सत्र : 12.15 से 01.45 बजे तक
अध्यक्ष : प्रो. प्रद्योत कुमार मुखोपाध्याय
1. वक्ता : प्रो. प्रकाश पाण्डेय
विषय : काश्मीर शैव दर्शन की दृष्टि से जीवमात्र के शिवत्व का प्रमाण
2. वक्ता : प्रो. बेटिना शारदा बोमर
विषय : Thakur Jaideva Singh's Contribution to the understanding of Abhinavgupta's Paratrishika Vivarana.
भोजनावकाश : 01.45 - 02.30 बजे तक

द्वितीय सत्र : 02.30 से 05.00 बजे तक
अध्यक्ष : प्रो. बेटिना बोमर
1. वक्ता : प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी
विषय : शैवदर्शन में रस निष्पत्ति प्रक्रिया
2. वक्ता : प्रो. शीतला प्रसाद उपाध्याय
3. वक्ता : प्रो. नवजीवन रस्तोगी
विषय : त्रिक दर्शन में योग के मानक रूप की खोज और रूपायन में अनुषङ्गी चुनौतियाँ

दिनांक 20 सितम्बर 2018

स्थान : के.एन. उडुपा सभागार, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

विषय : भारतीय संगीत शास्त्र के सम्वर्धन में ठाकुर जयदेव सिंह का अवदान

प्रथम सत्र : 10.30 से 12.00 बजे तक
मंगलाचरण : विद्वान् आर.एस. नन्दकुमार
अध्यक्ष : प्रो. प्रेमचन्द होम्बल
1. वक्ता : प्रो. अनिल बिहारी ब्योहार
विषय : संगीत शास्त्र का प्रयोग, निरपेक्ष विकास एवं कतिपय विसंगतियाँ
2. वक्ता : प्रो. कृष्णकान्त शर्मा एवं डॉ. स्वरवन्दना शर्मा
विषय : सामवेद से संगीत का सम्बन्ध

द्वितीय सत्र : 12.15 से 01.45 बजे तक
अध्यक्ष : प्रो. अनिल ब्योहार
1. वक्ता : डॉ. आर.एस. नन्द कुमार
विषय : Experience of Aesthestics in Music : An inquiry
2. वक्ता : प्रो. के. शशि कुमार
विषय : Aesthetic aspects in Indian Classical Music
भोजनावकाश : 01.45 - 02.30 बजे तक

तृतीय सत्र : 02.30 से 05.00 बजे तक
अध्यक्ष : प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी
1. वक्ता : डॉ. राधिका नन्दकुमार
विषय : The Kaku in Indian Music : An Elucidation
2. वक्ता : प्रो. प्रेमचन्द होम्बल
विषय : नृत्य एवं नाट्य में भाव तथा रस
3. वक्ता : डॉ. (श्रीमती) शम्भो खुराना एवं प्रो. नमन आहूजा
विषय : Nadadhina Jagatah : A Guru's Gift of the Universe of Music

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी

संगीताञ्जलि

पद्मभूषण सम्मान से अलंकृत संगीत शिरोमणि पण्डित छन्नू लाल मिश्र जी द्वारा अपने गुरु प्रसिद्ध संगीतशास्त्री ठाकुर जयदेव सिंह जी की 125वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित भावमयी प्रस्तुति में आप सादर आमन्त्रित हैं।

गायन

पण्डित छन्नू लाल मिश्र

सहयोगी कलाकार

गायन संगति : श्री अमन जैन

तबला संगति : श्री आदित्य कुमार मिश्र

हारमोनियम : श्री इन्द्रेश मिश्र

तानपूरा संगति : कुमारी रितिका

श्रीमती मेनका मिश्रा

दिनांकः 20 सितम्बर 2018, वृहस्पतिवार

समय : सायं 5.30 बजे से

स्थान : के.एन. उडुपा सभागार, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

उत्तरापेक्षी

0542-2570238, 09868114985